सन्तों से सीखना

स्वामी वासुदेवानन्द द्वारा लिखित परिचय

युगों-युगों से और यहाँ तक कि हमारे वर्तमान समय में भी, भारत अपने ऋषि-मुनियों, सिद्धों और सन्तों के लिए जाना जाता रहा है — वे महात्मा जो अपने अन्तर में और अपने चारों ओर भगवान की उपस्थिति के बोध में सतत रहते थे।

विशिष्ट रूप से, सातवीं शताब्दी से आरम्भ होकर सत्रहवीं शताब्दी के बीच ऐसे कई आत्मज्ञानी महात्मा हुए हैं। इस दौरान सन्तों की उपस्थिति ने ईश्वर के प्रति भक्ति की एक लहर उत्पन्न की जो दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य से प्रारम्भ हुई व कई गुना बढ़कर उत्तर में पहुँचते हुए पूरे देश में फैल गई।

ये सन्तजन, समाज के सभी वर्गों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से थे। तथापि, उनमें एक चीज़ समान थी — भगवान के प्रति उनकी प्रेमल सेवा जिन्हें वे प्रत्येक प्राणी के हृदय में देखते थे।

सन्तों के विषय में बात करते हुए श्रीगुरुमाई अपनी एक कविता में कहती हैं,

> उनका केवल एक लक्ष्य, एक ध्येय है :
> इस समस्त सृष्टि को भगवान के प्रति प्रेम से भर देना।
> उनका बस एक ही उद्यम है :
> भगवान का स्तुतिगान करना।[१]

भगवान की महिमा का गुणगान करने का इन सन्तों का एक तरीक़ा था, अपनी अन्तर-स्फुरणा से रचे गए काव्य तथा भजन। इस पूरे वर्ष के दौरान, इस वेबसाइट पर आपके पास यह अवसर होगा कि आप सन्तों के जाग्रत हृदय से प्रवाहित हुई इन कविताओं और भजनों को पढ़ें, उन्हें सुनें, उनका अध्ययन करें और कभी-कभी उन्हें गाने में स्वयं को निमग्न भी करें। इन सन्त-कवियों की संगति में रहना, श्रीगुरुमाई के इस वर्ष के सन्देश का अध्ययन और अनुभव करने का एक तरीक़ा है।

वर्ष २०१८ के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश है, 'सत्संग।'

जैसे-जैसे आप सन्तों की संगति में रहेंगे, उनके जीवन के बारे में जानेंगे, उनके प्रज्ञान को आत्मसात् करते जाएँगे और संसार को उनकी दृष्टि से देखेंगे, वैसे-वैसे आप स्वयं को सत्संग का अनुभव करने के लिए ग्रहणशील बनाते जाएँगे; सत्संग, जिसका अर्थ है सत्य की संगति में रहना।

ये सन्तजन कौन हैं?

कुछ सन्त, जिनसे आप मिलेंगे, वे सुविख्यात आध्यात्मिक गुरु थे जैसे कि आठवीं शताब्दी में हुए अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक, आदि शंकराचार्य और दसवीं शताब्दी में हुए आचार्य अभिनवगुप्त जिन्होंने काश्मीर शैवदर्शन पर प्रकाश डाला। आप गुरु नानकदेव के सान्निध्य का अनुभव करेंगे जो सिख परम्परा के संस्थापक थे और साथ ही आप महान सूफ़ी सन्त हज़रत निज़ामुद्दीन के सान्निध्य का भी अनुभव करेंगे। यद्यपि ये सभी सन्तजन विभिन्न आध्यात्मिक परम्पराओं से थे तथापि इनमें से प्रत्येक गुरु का यही अनुभव था कि भगवान संसार में व्याप्त हैं और यह भी कि सभी मनुष्य भगवान के बच्चे हैं।

कुछ सन्तों ने संस्कृत में उपदेश दिए जबकि अन्य कुछ जैसे गोस्वामी तुलसीदास, ज्ञानेश्वर महाराज और एकनाथ महाराज ने पहले से चली आई परम्परा से हटकर, भारत के महाकाव्यों तथा ग्रन्थों का अनुवाद जनसाधारण की स्थानीय भाषाओं में किया। इस प्रकार, उन्होंने पवित्र ज्ञान को उन सभी लोगों के लिए सुलभ कराया जिनके हृदय में इस ज्ञान की अनुभूति करने की ललक थी।

अन्य सन्त जैसे कि तुकाराम महाराज जो व्यवसाय से पन्सारी थे, सन्त जनाबाई जो एक गृहसेविका थीं, सन्त नामदेव जो एक दर्ज़ी के रूप में अपना जीवन-यापन करते थे और सन्त कबीर जो व्यवसाय से जुलाहे थे — इन सन्तों ने अपने काव्य में दैनिक जीवन की भाषा व उपमाओं का प्रयोग कर गूढ़ आध्यात्मिक अनुभूतियों व सच्चाइयों को समझाया। इससे अशिक्षित ग्रामवासी और किसान भी उन भजनों व अभंगों को सीखकर गा पाते थे और अपना जीवन जीते हुए, अपना कामकाज करते हुए तथा अपने परिवार की देखभाल करते हुए वे भगवान की उपस्थिति की प्रत्यक्ष अनुभूति का आवाहन कर पाते।

सन्त-कवि और सिद्धयोग पथ

सिद्धयोग के गुरुओं की सिखावनियों में भारत के सन्त-कवियों के काव्य और भजनों का हमेशा ही एक विशेष स्थान रहा है। जब बाबा मुक्तानन्द एक युवा संन्यासी थे और किसी ऐसे महात्मा की खोज में भारतभर भ्रमण कर रहे थे जो उन्हें सत्य का साक्षात्कार करा सकें, तब वे बार-बार महाराष्ट्र में

लौट आते; इसका एक कारण यह था कि महाराष्ट्र में शताब्दियों से रहे सन्त-कवियों के भजन व अभंग बाबा जी को आकर्षित करते।

बाद में, अपनी पुस्तकों तथा विश्वयात्राओं के दौरान दिए गए अपने प्रवचनों व सत्संगों के माध्यम से बाबा मुक्तानन्द ने सिद्धयोग की पवित्र सिखावनियों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के लिए ऐसे रूपों में उपलब्ध कराया जिससे लोग उन सिखावनियों को आसानी से समझ सकें — ठीक उसी प्रकार जैसा कि सन्त-कवियों ने किया था। अकसर, बाबा जी अपने प्रवचन के बीच, किसी विषय को समझाने हेतु सन्तों के किसी भजन को आनन्दपूर्वक गाने लगते।

श्रीगुरुमाई ने एक मधुर सरप्राइज़ २०१८ में सन्त-कवियों के बारे में बताते हुए इन महात्माओं के प्रति अपना गहन आदर व्यक्त किया — वे महान विभूतियाँ जिन्होंने भारतभर में सत्संग के अभ्यास की प्रेरणा दी। अपने शिक्षण कार्यक्रमों तथा रिकार्ड की गईं अनेक सी.डी. के द्वारा गुरुमाई जी ने जिस प्रकार इन सन्तों के काव्यों व भजनों को उपलब्ध कराया है, उससे इन सन्तों के प्रति गुरुमाई जी के प्रेम व आदर का लम्बे समय से परिचय मिलता रहा है। श्रीगुरुमाई से मार्गदर्शन और प्रोत्साहन पाकर कई सिद्धयोग-संगीतज्ञों ने सन्तों द्वारा रचित स्तुतियों और भजनों को गाना सीखा है।

वर्ष २००० की ग्रीष्म ऋतु के दौरान, श्री मुक्तानन्द आश्रम के बच्चों और युवा-किशोरों ने भारत के सात अतिप्रिय सन्तों के जीवन की कहानियों को नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किया था। नाटिकाओं की इस शृंखला का नाम है *The Golden Tales* जिसमें गुरुमाई जी ने तुलसीदास, मीराबाई, सूरदास और कबीर जी जैसे सन्तों के भजनों को संगीतबद्ध किया, उनका आयोजन किया और बच्चों के साथ मिलकर उन्हें गाया भी। ये भजन *Sounds of the Heart* नामक सी.डी. में संरक्षित किए गए हैं।

आज, श्रीगुरुमाई सन्त-कवियों के भजनों और सिखावनियों को विश्वभर के सिद्धयोगियों व साधकों के लिए उपलब्ध कराती हैं। इसके अतिरिक्त, गुरुमाई जी और बाबा जी, दोनों ने ही पवित्र एवं सूक्ष्म सिखावनियों को कविताओं के माध्यम से समझाने की परम्परा को जारी रखा है। श्रीगुरुमाई की पुस्तकें, *Pulsation of Love, The Magic of the Heart,* तथा 'अन्तर्धाणा' — ये सभी काव्यरूप में रचित हैं, और इसी प्रकार बाबा जी की पुस्तक, 'मुक्तेश्वरी' भी सूक्तियों के रूप में रचित है।

सन्तों के सान्निध्य से सीखना

इस वेबसाइट पर आप जिन सन्त-कवियों के दर्शन करेंगे वे सभी परम सत्य की अनुभूति में अवस्थित आत्मज्ञानी महात्मा हैं। उनकी सत्संगति में होने के प्रभाव से कितने ही लोगों ने अपने जीवन में

भगवान की नित्य उपस्थिति को अनुभव किया है। जो कविताएँ और भजन इन सन्तों ने रचे, वे आज भी उनके प्रज्ञान, उनकी परादृष्टि और उस एकात्म-अवस्था से गूँजते हैं जिसमें वे सदैव रहते थे।

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि जब आप इन सन्तों के वचनों को पढ़ें या उनके भजनों को सुनें तो इस समझ को धारण करें कि आप पवित्र ज्ञान के सान्निध्य में हैं। सरल से सरल प्रतीत होने वाला भजन या अभंग भी उसके रचनाकार को हुई सत्य की साक्षात् अनुभूति से पूरित है। ये महात्मा आपको जो देना चाहते हैं, उसे ग्रहण करने के लिए स्वयं को खुला रखें और समय निकालकर इस बात पर ध्यान दें कि ऐसा करने से क्या प्रभाव होते हैं। मनन करें कि सन्तों का प्रज्ञान किस प्रकार आपके अपने जीवन और साधना में लागू होता है। आप जो सीखें और अनुभव करें, उसे अपनी दैनन्दिनी में लिखें।

प्रायः ऐसा कहा जाता है कि हम जिसकी संगति रखते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। ऐसी शुभकामना है कि सन्तों के साथ सत्संग आपको परम सत्य को पहचानने में सम्बल प्रदान करे; वह परम सत्य जो हर क्षण आपके अन्तर में व आपके चारों ओर विद्यमान है।

---

[१] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *The Magic of the Heart* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९६] पृ. २०७।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।